Shri. Shahu Shikshan Prasarak Seva Mandal's
DR. CYRUS POONAWALLA INTERNATIONAL SCHOOL
A CBSE WORLD SCHOOL

RS. No. 245/E1, Kolhapur Road, Peth-Vadgaon, Tal. Hatkanangale, Dist. Kolhapur 416 112 (MS) India.
+ 91 230-2473399 (Office), 2473199 (Tele-Fax) & 2472499 (Hostel) 7720011501 info@dcpis.edu.in http://www.dcpis.edu.in

DCPIS/Academics/2023-24/006 Date: 11/04/2023

Dear Parents/Guardians,

Let me take this opportunity to share DCPIS' Policy about Division Formation. We have One Homogeneous Division and one/two Heterogeneous Division/s, considering the following points:

1. The Homogeneous Division students are mostly Auditory Learners who tend to do well in a traditional Teaching Learning Process by JUST listening to the lectures, contributing to discussions, etc. The Words are enough for them to explain.
2. The Heterogeneous Divisions are made up of Kinaesthetic Learners who need to be actively engaged in their education. They are 'tactile' learners who use movement, testing, trial and error and a non-traditional learning environment to retain and recall information. Their learning occurs via the process of doing. Moreover, Images, Pictures, Videos, Informative Slides, etc are the part and parcel of their Teaching & Learning Process due to which they 'Understand' the concept.
3. Students in New Divisions get acquainted with new friends and teachers where they are exposed to different exposure & different experiences. Thus, they become extrovert; tend to seek out social stimulation and opportunities to engage with others expanding their friend circle.
4. Gaps & cracks of foundation knowledge are filled in Heterogeneous Divisions and additional learning treat is given in Homogeneous Division.
5. Students should be familiar with the new environment to accept the new challenges, so shuffling is necessary.
6. Same Experienced and qualified teachers are allotted to both types of divisions with minor exceptions.

To sum up, DCPIS Curriculum is designed in such a way which meets the requirements of every type of learners. Division shuffling plays a vital role in it.

प्रिय अभिभावक,

इस अवसर पर मैं डिवीजन गठन के बारे में डीसीपीआईएस की नीति को साझा करना चाहूंगा। निम्नलिखित बिंदुओं पर विचार करते हुए हमारे पास एक सजातीय विभाजन और एक/दो विषम विभाजन हैं:

1. सजातीय डिवीजन के छात्र ज्यादातर श्रव्य शिक्षार्थी होते हैं जो केवल व्याख्यानों को सुनकर, चर्चाओं में योगदान देकर, आदि द्वारा पारंपरिक शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में अच्छा प्रदर्शन करते हैं। समझाने के लिए शब्द ही काफी हैं।

2. विषम डिवीजन किनेस्थेटिक शिक्षार्थियों से बने होते हैं जिन्हें अपनी शिक्षा में सक्रिय रूप से शामिल होने की आवश्यकता होती है। वे 'स्पर्शित' शिक्षार्थी हैं जो जानकारी को बनाए रखने और याद रखने के लिए आंदोलन, परीक्षण, परीक्षण और त्रुटि और एक गैर-पारंपरिक सीखने के माहौल का उपयोग करते हैं। उनका सीखना करने की प्रक्रिया के माध्यम से होता है। इसके अलावा, चित्र, चित्र, वीडियो, जानकारीपूर्ण स्लाइड आदि उनकी शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया का हिस्सा और पार्सल हैं जिसके कारण वे अवधारणा को 'समझते' हैं।

3. नए डिवीजनों में छात्र नए दोस्तों और शिक्षकों से परिचित होते हैं जहां उन्हें अलग-अलग एक्सपोजर और अलग-अलग अनुभव मिलते हैं। इस प्रकार, वे बहिर्मुखी हो जाते हैं; अपने मित्र मंडली का विस्तार करने वाले अन्य लोगों के साथ जुड़ने के लिए सामाजिक उत्तेजना और अवसरों की तलाश करते हैं।

4.विषम डिवीजन में आधारज्ञान के अंतराल और दरारों को भर दिया जाता है और सजातीय डिवीजनों में अतिरिक्त ज्ञानार्जन दिया जाता है।

5. छात्रों को नई चुनौतियों को स्वीकार करने के लिए नए माहौल से परिचित होना चाहिए, इसलिए फेरबदल जरूरी है।

6. मामूली अपवादों को छोड़कर दोनों प्रकार के डिवीजनों को समान अनुभवी एवं योग्य शिक्षकों का आवंटन किया जाता है।

संक्षेप में, डीसीपीआईएस पाठ्यक्रम इस तरह से डिज़ाइन किया गया है जो हर प्रकार के शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं को पूरा करता है। इसमें विभागीय फेरबदल अहम भूमिका निभाता है।

*In case of discrepancy in English & Hindi data, the English version shall prevail.
अंग्रेजीऔरहिंदीडेटामेंविसंगतिकेमामलेमें, अंग्रेजीसंस्करणमान्यहोगा।

Principal
DCPIS